International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बौद्ध दर्शन : विज्ञान और आध्यात्म का समन्वय

Mr. Pradeep Kumar[1], Prof. Dr. Sanjay Kumar Singh[2]

[1]Research Scholar, Philosophy, Dr. B.R. Ambedkar University Agra
[2]Professor, Philosophy, Dr. B.R. Ambedkar University Agra(IOP Vrindavan)

Abstract

दुनिया में बौद्ध धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जो न तो ईश्वर में और न ही आत्मा की नित्यता में विश्वास करता है। इसके बाद भी वह कर्म सिद्धांत और पुनर्जन्म सिद्धांत को स्वीकार करता है। बुद्ध किसी अतिप्राकृतिक सत्ता (जैसे :देवी देवताओं की सत्ता) को स्वीकार नहीं करते । बुद्ध के अनुसार जो सिद्धांत तर्क और अनुभव के विपरीत है उसे स्वीकार करने का कोई कारण नहीं है । बुद्ध ने एक ऐसे धर्म को प्रस्तुत किया जिसमें मानवीय समस्याओं का समाधान स्वयं मनुष्य ही करता है। ऐसे में आज के वैज्ञानिक युग में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता बढ़ जाती हैं, क्योंकि विज्ञान भी मनुष्य की समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक आविष्कारों के माध्यम से करता है । इस शोध निबंध का उद्देश्य बुद्ध के दर्शन में वैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टि को प्रस्तुत करना हैं। इस निबंध के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि आज के युग में विज्ञान और धर्म का समन्वय करके मानवता के उज्जवल भविष्य का मार्ग कैसे उपलब्ध हो सकता है।

दुनिया में बौद्ध धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जो न तो ईश्वर में और न ही आत्मा की नित्यता में विश्वास करता है। इसके बाद भी वह कर्म सिद्धांत और पुनर्जन्म सिद्धांत को स्वीकार करता है। बुद्ध किसी अतिप्राकृतिक सत्ता ;जैसे रूदेवी देवताओं की सत्ता द्ध को स्वीकार नहीं करते । बुद्ध के अनुसार जो सिद्धांत तर्क और अनुभव के विपरीत है उसे स्वीकार करने का कोई कारण नहीं है । बुद्ध ने एक ऐसे धर्म को प्रस्तुत किया जिसमें मानवीय समस्याओं का समाधान स्वयं मनुष्य ही करता है। ऐसे में आज के वैज्ञानिक युग में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता बढ़ जाती हैंए क्योंकि विज्ञान भी मनुष्य की समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक आविष्कारों के माध्यम से करता है । इस शोध निबंध का उद्देश्य बुद्ध के दर्शन में वैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टि को प्रस्तुत करना हैं। इस निबंध के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि आज के युग में विज्ञान और धर्म का समन्वय करके मानवता के उज्जवल भविष्य का मार्ग कैसे उपलब्ध हो सकता है।

बुद्ध के दर्शन की आधारशिला है एचार आर्य सत्य । जो इस प्रकार हैं .संसार में दुख हैए दुख का कारण हैए दुख का निवारण हैए और दुख निवारण का मार्ग है। बुद्ध की यह दृष्टिए वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया से पूरी तरह मेल खाता है। यह चार आर्य सत्य मानव जीवन में दुखों के स्वरूप को प्रस्तुत करते हैंए साथ ही साथ हमें आशावादी दृष्टि भी देते हैं कि दुखों का निवारण भी है। ठीक इसी प्रकार हमारे वैज्ञानिक चिंतन में भी यही बात आती है। पहले हम किसी समस्या को देखते हैंए फिर उसके कारण को समझते हैं एकाग्रण को समझने के बाद उसके निवारण के मार्ग को ढूंढते हैंए और अंत में उसका निवारण करके मनुष्य की समस्याओं का समाधान करते हैं। । स्पष्ट है कि बुद्ध की पद्धति और विज्ञान की पद्धति दोनों एक जैसे है । दोनों में बिना किसी पूर्वाग्रह के समस्या को ढूंढा जाता है। और समस्या को पूरी तरह समाप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया वैज्ञानिक प्रक्रिया है। हम यह भी जानते हैं कि वैज्ञानिक अनुसंधान अथवा शोध कार्य कुछ विशेष चरणों का अनुपालन करते हैं। जिसे हम इस प्रकार समझ सकते हैंरू 1ण् किसी समस्या को देख कर उसको हल करने की प्रेरणाए 2ण् समस्या से सम्बन्धित तथ्यों का संकलनए 3ण् विवेकपूर्ण विश्लेषण 4ण् परिणाम अथवा समस्या का समाधान। बुद्ध ने अपने जीवन में सबसे बड़ी समस्या को दुख के रूप में देखा। इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने अपने दार्शनिक सिद्धांत को प्रस्तुत किया। समस्या ; दुख द्ध को जानने के बाद बुद्ध ने दुख के कारण को समझा। दुख का कारण समझ में आने के बाद बुद्ध ने उस कारण के निवारण के लिए मार्ग का आविष्कार किया ।

जिसे बुद्ध ने अष्टांग मार्ग कहा । बुद्ध के अनुसार यह अष्टांग मार्ग समस्त दुखों के अंत का मार्ग है । बुद्ध के अनुसार मनुष्य राग के कारण विषयों को आकर्षित करता है एजो उसके दुख का कारण है । इसलिए मनुष्य को राग से मुक्त करने के लिए बुद्ध ने श्धम्मश का अर्थात अष्टांग मार्ग का उपदेश दिया । इसलिए बुद्ध का धर्म में एक वैज्ञानिक धर्म हैए जिसमें मनुष्य अपने निजी प्रयासों के द्वारा दुखों से सदैव के लिए मुक्त हो सकता है। बुद्ध कहते हैं की किसी अति प्राकृतिक सत्ता के आशीर्वाद अथवा कृपा के द्वारा हम दुखों से मुक्त नहीं हो सकते। यदि हम दुखों से मुक्त होना चाहते हैं तो हमें दुख के कारण से मुक्त होना पड़ेगा। यहां पर स्पष्ट है कि बुद्ध की दृष्टि पूरी तरह वैज्ञानिक और तार्किक है ।

बौद्ध दर्शन का प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धांत कारण कार्य सिद्धांत के रूप में जाना जाता है । यह दो शब्दों से मिलकर बना है। प्रतीत्य का अर्थ है .इसके होने से एऔर समुत्पाद का अर्थ है. ऐसा होता है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी घटना घटती है तो उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। बुद्ध के अनुसार उत्पत्ति न अपने आप होती है और नहीं बिना किसी कारण के होती हैए बल्कि जगत की वस्तुओं के उत्पन्न होने का कोई न कोई पूर्ववर्ती कारण होता है।;1द्ध आधुनिक विज्ञान भी इस सत्यता को स्वीकार करता है।

बुद्ध ने संबोधित प्राप्त करने के उपरांत दुखों के कारण पर अनुलोम और प्रतिलोम दोनों रूपों से विचार किया। अर्थ यह है कि बुद्ध ने सबसे पहले दुख को देखा और उसके करण को ढूंढा । कारण को जानने के बाद उन्होंने उससे उत्पन्न होने वाले घटनाओं को समझा और इस निष्कर्ष पर आए की अविद्या रूपी कारण से दुख रूपी कार्य का जन्म होता है। विज्ञान ने भी इस बात को प्रमाणित किया है कि किसी भी घटना के उत्पन्न होने में करण का होना आवश्यक है। यदि हम क्रिया .प्रतिक्रिया के नियम को समझे तो वहां पर भी किसी क्रिया के बराबर प्रतिक्रिया होती है । यह भौतिक जगत का निश्चित नियम है । विज्ञान भौतिक जगत के कारण. कार्य नियम की खोज करता हैंए जबकि बुद्ध ने कर्म के सिद्धांत के रूप में कारण .कार्य के नियम की खोज की। अर्थात शुभ कर्मों का फल सुखद होगा और अशुभ कर्मों का फल दुखद होगा। बुद्ध के अनुसार हमारे कर्मों का परिणाम हमें सुख और दुख के रूप में मिलता है। यदि भगवान बुद्ध के इस सिद्धांत को हम जीवन में उतारे तो निश्चित रूप से अशुभ कर्मों से बचेंगे और भविष्य में सुखद परिणाम उपलब्ध होंगे। यदि हम इस सिद्धांत को अपने कार्य व्यवहार में उतारें तो अपना व्यक्तिगत भला करते हुए सामाजिक समरसताए सौहार्दए और सुखद सामाजिक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं ।

प्रतीत्य समुत्पाद में 12 अंग हैं। बुद्ध के अनुसार प्रतीत्य समुत्पाद के अंग एक दूसरे की अपेक्षा रखकर उत्पन्न होते हैं। अविद्या मूल कारण है एजिसका कोई कारण नहीं है। इसके अतिरिक्त संस्कार एविज्ञानए नामरूपएषडायतन एस्पर्शए वेदनाए तृष्णाएउपादान एभव एजाति एजरा. मरण यह प्रतीत्य समुत्पाद के क्रमशः अंग है। जिसमें प्रथम अंग दूसरे का कारण बनता है और दूसरा तीसरे का कारण बनता है । इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है। अविद्या के नाश होने से संपूर्ण चक्र रुक जाता हैए और जीव दुखों से मुक्त हो जाता है ।

बौद्ध दर्शन में सृष्टि के संबंध में जो सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है वह आज के वैज्ञानिक ज्ञान से पूरी तरह मेल खाता है। विज्ञान के अनुसार सृष्टि किसी ने बनाया नहीं है बल्कि यह विकसित हो रही है। बुद्ध के अनुसार भी सृष्टि का कोई निर्माता नहीं है। बुद्ध के अनुसार ठोस दिखाई देने वाली वस्तुएं भी वास्तविक रूप में ठोस नहीं है। स्थिर दिखाई देने वाली वस्तुएं भी वास्तव में भी स्थिर नहीं है। बल्कि सभी दिखाई देने वाले पदार्थ प्रतिक्षण प्रज्वलित और प्रकम्पित होते रहते हैं । बुद्ध कहते हैं. संपूर्ण जगत प्रकंपन है। सब्बो प्रज्वलितो लोको सब्बो लोको पकंपितो ।;4द्ध अर्थात सब कुछ फ्लक्स है। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो इसे ऊर्जा कह सकते हैं । ऊर्जा ही प्रतिक्षण प्रवाहित होकर द्रव्य रूप में और जगत के आधार के रूप में निरंतर बनी रहती है। इसमें सदैव परिवर्तन होता रहता है। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने इस बात की पुष्टि की है कि द्रव्य और ऊर्जा एक दूसरे में रूपांतरित होते रहते हैं । इस प्रकार बुद्ध परमाणु वाद से भी आगे की बात करते हैं। परमाणुवाद एक नित्य अंतिम कारण को स्वीकार करता है .जो विभाजित नहीं हो सकताए और जिसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होता । बुद्ध के अनुसार ऐसा कोई तत्व संसार में नहीं है जिसमें परिवर्तन न होता

हो। आधुनिक विज्ञान बुद्ध की इस बात को प्रमाणित करता है। स्पष्ट है कि संसार के विषय में बुद्ध की परिकल्पना और आधुनिक वैज्ञानिक परिकल्पना में समानता है।

आत्मा के नित्यता संबंध में सभी भारतीय दार्शनिक एकमत हैं. चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन को छोड़कर। आत्मा के नित्यता में विश्वास करने वाले दर्शनों की यह मान्यता है कि समस्त परिवर्तन के आधार के रूप में नित्य आत्मा को स्वीकार करना आवश्यक होगाए क्योंकि नित्य आत्मा को स्वीकार किए बिना ज्ञान की संभावना समाप्त हो जाती है। बुद्ध कहते हैं की आत्मा के नित्यता का सिद्धांत इसलिए स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि हमारे अनुभव में नित्य आत्मा नहीं आता है। बुद्ध कहते हैं कि जिस प्रकार दीपक की ज्योति देखने से स्थिर और अपरिवर्तनशील लगती हैए जबकि वह प्रशिक्षण परिवर्तित हो रही है एठीक उसी प्रकार हमारे भीतर चेतना का प्रवाह चलता रहता है और हम इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि वह नित्य आत्मा है। बुद्ध इसे चेतना .प्रवाह कहते हैं। यही हमारे सभी कर्मों का आधार है।;5द्ध बुद्ध की दृष्टि में तृष्णा के कारण ही यह प्रवाह निरंतर बना रहता है । तृष्णा के नाश होने से प्रवाह रुक जाता है । यह निर्वाण की स्थिति है।

आधुनिक वैज्ञानिक खोजो ने इस बात को प्रमाणित किया है कि पेड़ पौधों में भी चेतना होती है। अर्थात उनमें भी संवेदना होती है । भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने इस सत्य को प्रयोग करके दिखाया । बुद्ध आज से ढाई हजार वर्ष पहले इस सत्य से अवगत थे। इसलिए उन्होंने पेड़. पौधों को नुकसान पहुंचने को अपराध कहा। उनके अनुसार यदि कोई भिक्षु बड़े पेड़ को काटे तो वह पाराजिक नामक अपराध से आपन्न होता है।;6द्धबुद्ध पर्यावरण संरक्षण को मानव जीवन से भी जोड़ते हैं । बुद्ध स्वयं वनों में अपना निवास बनाते हैं । शुद्ध प्राकृतिक वातावरण में ध्यान और शांति का उपदेश देते हैं । आज हम ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से जूझ रहे हैं । जबकि बुद्ध के समय में ग्लोबल वार्मिंग की समस्या नहीं थीए फिर भी उन्होंने पर्यावरण के संबंध में वैज्ञानिक समाधान देने का कार्य किया । वह कहते हैं. यदि कोई स्वस्थ भिक्षु गर्मी की इच्छा से अग्नि जलाए अथवा जलवाए तो वह पचितिय दोष का भागी होता है।;7द्ध कुतदंत सुत मे कहा गया है कि भौतिक यज्ञ में यूप निर्माण के लिए वृक्ष काटे जाते थे एपर हिंसा के लिए दर्भ ;कुश द्ध काटे जाते थेए परंतु बुद्ध जिस आध्यात्मिक यज्ञ को प्रस्तुत करते हैं वह पूरी तरह वैज्ञानिक था । इसमें ना तो वृक्षों की कटाई होती थी और न ही पर हिंसा के लिए दर्भ ; कुश द्धकाटे जाते थे।;8द्ध

बुद्ध ने जल प्रदूषण को रोकने के लिए भी प्रयास किए । विनय पिटक के कई स्थल पर बुद्ध जल को अर्थात नदियों और कूपों को दूषित करने से मना किया। पानी में मल. मूत्र को त्यागने को रोका गया। बुद्ध ने भिक्षुकों को यह शिक्षा भी दिया कि कूड़े. कचरे को इधर.उधर न फेंक कर एक सुनिश्चित स्थान पर ही रखना चाहिए।; 9द्ध इससे पता चलता है बुद्ध बीमारियों से बचने के लिए वैज्ञानिक दृष्टि का अवलंबन करना चाहते थे । यहां पर अंधविश्वास को स्थान नहीं है। बुद्ध मानव जीवन को पूरी तरह वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित करना चाहते थे। हम देखते हैं कि बुद्ध की धार्मिक दृष्टि जिसमें अहिंसा एप्रेमए करुणा और मैत्री मानवता को एक सूत्र में बांधने का कार्य करते हैं तो उनकी वैज्ञानिक दृष्टि प्रकृति के नियमों को जानकर संसार को सुखद बनाने का संदेश देते हैं। स्पष्ट है कि बुद्ध की दृष्टि विज्ञान और आध्यात्म का ऐसा संगम है जो विश्व कल्याण के साथ मानव जाति के उज्जवल भविष्य का मार्गदर्शक भी है। आज दुनिया में अशांतिए आतंक एहिंसा ए भय और युद्ध का वातावरण बना हुआ है। आज भी असमानताए गरीबी एमानवीय मूल्यों का ह्रासए वैमनस्यता एऔर भेदभाव जैसी समस्याएं हैं । बुद्ध के समय में भी इस तरह की समस्याएं थी। बुद्ध ने इन समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक और मानवतावादी दृष्टि दिए । बुद्ध के विचारों को अपने आचरण में लाकर हम विश्व में शांतिए सद्भावना एवं कल्याण की कल्पना कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. उपाध्यायए आचार्य बलदेव ;2011द्ध। बौद्ध.दर्शन.मीमांसा। वाराणसीरू चौखम्भा विद्या भवन। पृष्ठ 60।
2. मज्जिम निकायए प्रथम सुत्त दृ मूलपरिय सुत।
3. भ्नउमए क्ंअपकण भ्नउम ॅवतोए खण्ड.1ए पृष्ठ दृ3।

4. संयुक्त निकाय ;संण्निण्द्ध 1ण्68 दृ उपचाला सुत्तं ;सब्बो पज्जलितो लोकोए सब्बो लोको पकम्पितोद्ध।
5. वर्माए कृष्ण देव प्रसाद ;2013द्ध। षचित्त शोधक के रूप में भगवान बुद्धष बौद्ध प्रज्ञा सिंधुए संपादक दृ प्रोण् सत्य प्रकाश शर्मा। नई दिल्लीरू न्यु भारतीय बुक कारपोरेशन। पृष्ठ 122।
6. लाभए निहारीका ;2009द्ध। ष्पालि टिपिटक में पर्यावरण चिंतनष बौद्ध प्रज्ञा सिंधुए खंड 4। नई दिल्लीरू न्यु भारतीय बुक कारपोरेशन। पृष्ठ 425।
7. विनयपिटक दृ पचित्तिय पालि ;1998द्ध। विण्विण्विण् भाग.88ए इगतपुरी। पृष्ठ 156।
8. दीघ निकाय ;1998द्ध। विण्विण्विण् भाग.88ए इगतपुरी। पृष्ठ 156।
9. धम्मपद पालि ;1998द्ध। विण्विण्विण् भाग.47ए इगतपुरी। पृष्ठ 23।
10. सिंहए देवराज ;5 मई 2023द्ध। ष्बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकताष पांचजन्य समाचार पत्र।